209sk05

5

प्राणस्य श्रेष्ठत्वम्

भारतीय वाङ्मय में उपनिषद् ग्रंथों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनमें हमारे जीवन के संबंध में अनेक प्रश्नों पर गंभीरता से विचार किया गया है और अनेक विषयों को बड़े सरल और रुचिपूर्ण ढंग से समझाया गया है। इस पाठ में आप पढ़ेंगे कि हमारे शरीर में अनेक इन्द्रियाँ हैं जिनके द्वारा हमारा शरीर ठीक ढंग से कार्य करता है। इन इन्द्रियों में कौन सब से अधिक महत्त्वपूर्ण है? कौन सबमें श्रेष्ठ है? इस प्रश्न का उत्तर प्रस्तुत पाठ में वैज्ञानिक ढंग से दिया गया है। आइए देखें कि हमारे शरीर में कौन श्रेष्ठ है और क्यों?

उद्देश्यानि

इमं पाठं पठित्वा भवान्/भवती

- इन्द्रियाणां नामानि लेखिष्यति तेषां कार्याणि च वर्णयिष्यति;
- क्त्वा-ल्यप् प्रत्ययप्रयोगं करिष्यति;
- परसवर्णसंधियुक्तानां पदानां सन्धिच्छेदं करिष्यति;
- हलन्तनपुंसकलिंगशब्दानां (सकारान्तानाम्) वाक्येषु प्रयोगं करिष्यति;
- तरप्-तमप् प्रत्यययोः ईयसुन् -इष्ठन् प्रत्यययोः च उपयोगपूर्वकं पदानि लेखिष्यति।

क्रियाकलापः 5.1

एक बार हाथ, पैर, मुँह, और उदर में मनमुटाव हो गया। हाथ और पैर ने कहा कि हम बहुत परिश्रम करके अन्न कमाते हैं। मुँह ने कहा, मैं अन्न को दांतों से चबाकर सुपाच्य बनाता हूँ। यह उदर कुछ नहीं करता। खाली बैठा रहता है। हमें इसकी पूर्ति करनी पड़ती

है। अब हम लोग काम नहीं करेंगे, देखते हैं कि उदर को अन्न कहाँ से मिलता है। हाथ और पैर ने अन्न कमाना छोड़ दिया, मुँह ने अन्न चबाना छोड़ दिया। अब आप सोच कर बताइए कि आगे क्या हुआ होगा?

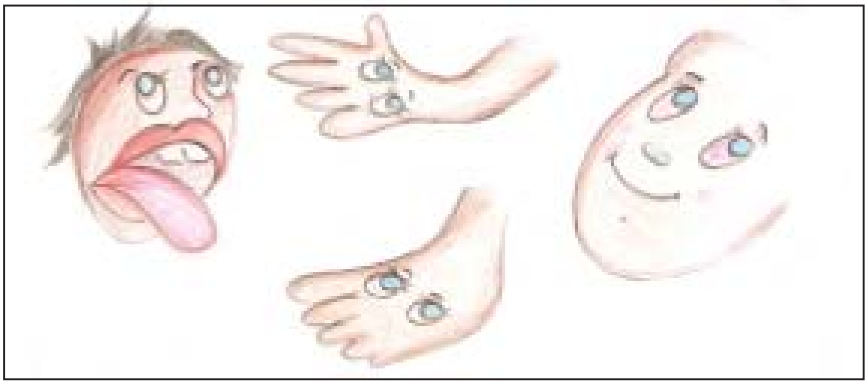

चित्र 5.1 : हाथ, पैर, मुँह, आँख

आप ने ठीक सोचा। हाथ, पैर और मुँह द्वारा काम न करने के कारण उदर को अन्न नहीं मिला। अतः उदर ऊर्जा उत्पन्न कर हाथ पैर और मुँह इन अङ्गों तथा दूसरी इन्द्रियों को नहीं दे सका। इससे सभी इन्द्रियाँ दुर्बल एवं अशक्त हो गईं। तब उनकी समझ में आया कि यदि उदर अन्न से ऊर्जा तैयार कर उन्हें न दे तो वे सब अशक्त और असमर्थ हो जाएँगे।

हाथ, पैर आदि कर्मेन्द्रियाँ हैं और आंख, नाक तथा कान आदि ज्ञानेन्द्रियाँ हैं। एक बार ज्ञानेन्द्रियों में भी इसी प्रकार झगड़ा हुआ कि हममें कौन श्रेष्ठ है। इस विवाद का निर्णय कैसे हुआ? आइये, पढ़ें।

5.1 इदानीं मूलपाठं पठामः

प्रथमः एकांशः

पुरा प्राणाः, वाक्, चक्षुः, श्रोत्रं, मनः इत्येतेषां मध्ये अहं श्रेष्ठोऽहं श्रेष्ठ : इति विवादः संप्रवृत्तः। परस्परं विवदमानाः प्राणादयः पितरं प्रजापतिम् एत्य अपृच्छन् –'भगवन्, को हि नः श्रेष्ठः?' प्रजापतिः अवदत् –'यस्मिन् शरीरात् निर्गते तत् शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः।'

एतत् श्रुत्वा प्रथमं वाक् शरीरात् निर्गता। सा वर्षं यावत् प्रोष्य प्रत्यागता अपृच्छत् –'कथं भवखिः मया विना जीवितम्?' प्राणादयः अवदन् –'यथा मूकाः वाचा अवदन्तः अपि, प्राणेन श्वसन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, श्रोत्रेण शृण्वन्तः, मनसा ध्यायन्तः जीवन्ति, एवं वयम् अपि अजीवाम।' प्राविशत् ह वाक्।

शब्दार्थाः

प्रथमः एकांशः

पुरा = पुराने समय में,
वाक् = वाणी,
संप्रवृत्तः = प्रारभ हो गया,
एत्य = आ कर,
नः श्रेष्ठः = हम में श्रेष्ठ है,
वः श्रेष्ठः = तुम में श्रेष्ठ है,
प्रोष्य = बाहर रहकर, निवास कर,
प्रत्यागता = लौट आई,
मूकाः = गूंगे,
श्वसन्तः = सांस लेते हुए,
चक्षुषा = आँख से,
श्रोत्रेण = कान से,
मनसा = मन से,
चक्षुः = आँख,
शृण्वन्तः = सुनते हुए,
निरगच्छत् = निकल गया,

ततः चक्षुः निरगच्छत् संवत्सरं प्रोष्य प्रत्यावृत्य अपृच्छत् – 'कथं यूयं मया विना अजीवत?'' ते अवदन्– 'यथा अन्धाः चक्षुषा अपश्यन्तः अपि, प्राणेन श्वसन्तः, वाचा वदन्तः, श्रोत्रेण शृण्वन्तः, मनसा ध्यायन्तः जीवन्ति तथा वयम् अपि अजीवाम।' प्राविशत् ह चक्षुः।

द्वितीयः एकांशः

ततः श्रोत्रं निरगच्छत्। वर्षान्ते प्रत्यागत्य अपृच्छत्– 'कथं यूयं मयि निर्गते अजीवत?' ते प्रत्यवदन् – 'यथा बधिराः, श्रोत्रेण अश्रृण्वन्तः, प्राणेन श्वसन्तः वाचा वदन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, मनसा विचारयन्तः जीवन्ति तथा वयम् अपि अजीवाम।'

अतः परं मनः निर्गतम्। वर्षं परिभ्रम्य पुनः आगत्य अपृच्छत् –'कथम् मयि गते यूयम् अजीवत?' प्राणादयः अवदन्–'भोः! यथा बालाः मनसा विना प्राणेन श्वसन्तः, वाचा वदन्तः, चक्षुषा पश्यन्तः, श्रोत्रेण शृण्वन्तः जीवन्ति तथा वयमपि अजीवाम।'

ततः प्राणाः निर्गन्तुं प्रारभन्त। तस्मिन्नेव क्षणे सर्वाणि वाक् प्रभृतीनि इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्। कष्टेन च प्राणम् अवदन् – 'भगवन्! मा गच्छ। त्वमेव अस्मासु श्रेष्ठः। त्वम् एव अस्माकं नियन्ता।

द्वितीयः एकांशः

वर्षान्ते = एक वर्ष के पश्चात्,
बधिराः = बहरे,
परिभ्रम्य = भ्रमण कर, घूम कर,
मयि गते = मेरे जाने पर,
निर्गन्तुं प्रारभन्त = निकलने लगे,
पीडितानि = दुःखी हुईं,
अस्मासु = हममें,
नियन्ता = नियंत्रण करने वाला,

बोधप्रश्नाः

1. **कोष्ठकात् उचितपदं चित्वा रिक्तस्थानं पूरयत॥**

(क) प्राणादयः पितरं .... एत्य अपृच्छन्।

(ख) एतत् श्रुत्वा प्रथमं .... शरीरात् निर्गता।

(ग) यथा बधिराः .... अश्रृण्वन्तः जीवन्ति तथा अजीवाम।

(घ) मनः अपृच्छत्, 'कथं .... गते यूयम् अजीवत?'

(ङ) मा गच्छ, त्वम् एव .... श्रेष्ठः।

(मयि, प्रजापतिम्, श्रोत्रेण, नः, वाक्)

2. **रेखया उचितं मेलनं कुरुत।**

(i)	वाचा	(क)	शृण्वन्तः
(ii)	चक्षुषा	(ख)	ध्यायन्तः

(iii) श्रोत्रेण (ग) श्वसन्तः
(iv) प्राणेन (घ) वदन्तः
(v) मनसा (ङ) पश्यन्तः

5.2 अधुना पाठम् अवगच्छामः

5.2.1 प्रथमः एकांशः

पुरा प्राणाः .... चक्षुः।

व्याख्या

एक बार आँख, कान, वाक् आदि में यह झगड़ा हो गया कि कौन श्रेष्ठ है। सभी इन्द्रियाँ अपने को श्रेष्ठ बताने लगीं। तब वे सारी मिलकर ब्रह्मा के पास गईं। ब्रह्मा ने कहा कि जिसके चले जाने पर शरीर नष्ट हो जाए, अर्थात् जी न सके वही तुम सबमें श्रेष्ठ है।

वाक् निर्गता–यह सुन कर सबसे पहले वाक् इन्द्रिय शरीर से निकलकर चली गई। मनुष्य का बोलना बंद हो गया। एक वर्ष तक वाक् इन्द्रिय निष्क्रिय रही। एक वर्ष बाद वह लौट आई अर्थात् मनुष्य ने बोलना शुरू कर दिया। वाक् इन्द्रिय ने आकर अन्य इन्द्रियों से पूछा कि तुम मेरे बिना कैसे जीवित रहीं? बाकी इन्द्रियों ने उत्तर दिया कि जैसे गूंगे, शरीर के सारे काम करते हुए जीते हैं वैसे ही हम भी जीवित रहीं।

चक्षुः निरगच्छत्–वाक् इन्द्रिय के पश्चात् आँख चली गई। आदमी को दिखना बन्द हो गया। एक वर्ष बाद उसने आकर बाकी इन्द्रियों से पूछा कि मेरे बिना तुम कैसे रहीं? बाकी इन्द्रियों ने उत्तर दिया कि जिस प्रकार अंधे व्यक्ति, देखने में समर्थ न होने पर भी शेष इन्द्रियों से सभी काम करते हुए जीते हैं, ऐसे हम भी जीवित रहीं।

अभिप्राय यह है कि वाणी या आँख न होने से हमारी बोलने की शक्ति या देखने की शक्ति तो चली जाती है परंतु हमारे अस्तित्व में कोई अंतर नहीं पड़ता, हमारा शरीर यथावत् बना रहता है।

पितरं प्रजापतिम्– सृष्टि की रचना ब्रह्मा ने की। प्रजा का अर्थ है संतान। संतान का स्वामी होने के कारण ब्रह्मा को प्रजापति कहा गया है। जैसे संतान को पैदा करने वाला व्यक्ति पिता कहलाता है वैसे ही प्रजा अर्थात् सृष्टि को पैदा करने वाले प्रजापति को पिता कहा गया है। सारी सृष्टि ब्रह्मा की प्रजा है, संतान है। वे इसके स्वामी हैं, पिता हैं। इसलिए कहा गया है 'पितरं प्रजापतिम्'।

यस्मिन् निर्गते– जिस के चले जाने पर, जिस इन्द्रिय के इस शरीर को छोड़ देने पर, अर्थात् जिस इन्द्रिय के निष्क्रिय हो जाने पर शरीरं नश्येत्, शरीर जीने में समर्थ न रहे, मर जाए।

वर्षं यावत् प्रोष्य/संवत्सरं प्रोष्य- एक साल तक बाहर रह कर। ब्रह्मा की बात सुन कर सब से पहले वाक् इन्द्रिय शरीर से बाहर चली गई अर्थात् मनुष्य की बोलने की शक्ति चली गई। वह एक साल तक नहीं बोल सका। एक साल बाद उसकी बोलने की शक्ति लौटी। अर्थात् एक साल के बाद बोलने में समर्थ हुआ।

वाचा अवदन्तः- वाणी से न बोलते हुए। मनुष्य वाक् इन्द्रिय से बोलता है। वाणी से हमारा जीवन सुविधापूर्वक चलता है। हम अपनी आवश्यकताओं या मनोभावों को वाणी से प्रकट करते हैं तथा अपने मनोभावों को प्रकट कर दूसरों के समक्ष रख सकते हैं। जो लोग बोलने में असमर्थ होते हैं, गूंगे होते हैं उन्हें जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है परंतु इसके बावजूद उनके अस्तित्व के लिए कोई संकट उत्पन्न नहीं होता। बोलने में असमर्थ होने पर भी उनका शरीर नष्ट नहीं होता।

चक्षुषा अपश्यन्तः- आंख से न देखते हुए वाक् इन्द्रिय एक साल बाहर रह कर फिर शरीर में लौट आई तो उसके बाद चक्षु इन्द्रिय शरीर से बाहर चली गई यह मान कर कि मेरे बिना शरीर नहीं रह सकता। अतः मैं ही श्रेष्ठ सिद्ध हो जाऊँगी। एक साल भर मनुष्य देखने में असमर्थ रहा। साल के बाद चक्षु इन्द्रिय लौट आई अर्थात् मनुष्य में देखने की शक्ति लौट आई। चक्षु इन्द्रिय ने बाकी इन्द्रियों से पूछा कि तुम मेरे बिना कैसे जीवित रहीं? इन्द्रियों ने उत्तर दिया कि जैसे अंधे व्यक्ति आँख से देखने में असमर्थ होने पर भी शेष इन्द्रियों से कार्य को सम्पन्न करते हुए जीते हैं वैसे ही हम भी जीवित रहीं।

व्याकरणबिन्दवः

(क) संधि-विच्छेद

इत्येतेषाम् = इति + एतेषाम्
श्रेष्ठोऽहम् = श्रेष्ठः + अहम्
श्रेष्ठ इति = श्रेष्ठः + इति
को हि = कः + हि
प्रोष्य = प्र + उष्य
प्रत्यागता = प्रति + आगता
प्राणादयः = प्राण + आदयः
निरगच्छत् = निः + अगच्छत्

(ख) उपसर्गाः प्रत्ययाश्च

संप्रवृत्तः = सम् + प्र + वृत् + क्त
प्रोष्य = प्र + वस् + ल्यप्
प्रत्यागता = प्रति + आ + गम् + क्त + टाप्
प्रत्यावृत्य = प्रति + आ + वृ + ल्यप्

वदन्तः = वद् + शतृ, पुं., प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

श्वसन्तः = श्वस् + शतृ, पुं., प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

पश्यन्तः = दृश् (पश्य्) + शतृ, पुं., प्र. बहुवचन

शृण्वन्तः = श्रु + शतृ, पुं., प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

ध्यायन्तः = ध्यै + शतृ, पुं., प्रथमा विभक्ति, बहुवचन

पाठगतप्रश्नाः 5.1

1. **पूर्णवाक्येन संस्कृतेन उत्तरं लिखत।**

   (क) प्राणादयः कं गताः?

   (ख) प्राणादयः प्रजापतिं किम् अवदन्?

   (ग) प्रजापतिः किम् उत्तरम् अयच्छत्?

   (घ) सर्वप्रथमं का शरीरात् बहिः गता?

   (ङ) इन्द्रियाणि चक्षुः प्रति किम् अवदन्?

2. **निम्नलिखितधातुभिः सह शतृप्रत्ययं योजयत**

   (i) दृश् + शतृ, पुं प्रथमा बहुवचनम् = ...

   (ii) ध्यै + शतृ, पुं प्रथमा बहुवचनम् = ...

   (iii) श्रु + शतृ, पुं प्रथमा बहुवचनम् = ...

   (iv) श्वस् + शतृ, पुं प्रथमा बहुवचनम् = ...

   (v) वद् + शतृ, पुं प्रथमा बहुवचनम् = ...

5.5.2 द्वितीयः एकांशः

ततः श्रोत्रं .... नियन्ता।

व्याख्या–

ततः श्रोत्रं निरगच्छत्– इसके बाद कान चले गए। अर्थात् मनुष्य की सुनने की शक्ति समाप्त हो गई। जो मनुष्य सुन नहीं सकता उसे सामान्यजीवन में विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ता है। वह सामने वाले की बात न सुन पाने के कारण अपेक्षित व्यवहार नहीं कर

पाता। कई बार उलटा व्यवहार ही कर बैठता है। परन्तु न सुनने के कारण हमारे अस्तित्व पर कोई संकट नहीं आता। बहरे लोग भी इस संसार में जीते हैं और अपना जीवन निर्वाह करते हैं।

अत:परं मन:निर्गतम्- इसके बाद मन निकल गया अर्थात् मनुष्य का मन पर नियंत्रण नहीं रहा। मनुष्य की पहचान ही मन से होती है। कहा जाता है- मननात् मनुष्य:। मनुष्य सोच विचार कर सकता है। इसीलिए वह मनुष्य कहलाता है। मन से मनुष्य संकल्प विकल्प करता है। मन में उन्माद रोग से मनुष्य विक्षिप्त हो जाता है। वह स्थिर नहीं रह पाता है। मन के स्वास्थ्य के बिना मनुष्य सुखपूर्वक जीवन व्यतीत नहीं कर सकता परन्तु मन के अस्वस्थ होने पर हमारे शरीर का अस्तित्व बना ही रहता है। शरीर नष्ट नहीं होता।

तत: प्राणा: निर्गन्तुं प्रारभन्त- इस के बाद प्राणों ने निकलना प्रारंभ कर दिया। सभी इन्द्रियाँ एक एक बार शरीर से अलग हुई तथा वर्ष भर बाहर रह कर लौट आई परंतु उनकी अनुपस्थिति में भी शरीर का अस्तित्व बना रहा। वह नष्ट नहीं हुआ। ब्रह्मा ने कहा था कि जिस इन्द्रिय के शरीर से निकल जाने पर शरीर नष्ट हो जाए वही श्रेष्ठ है। वाक्, चक्षु, श्रोत्र और मन सभी ने निकल कर देख लिया। किसी के निकलने से शरीर नष्ट नहीं हुआ। वह अपने रूप में बना रहा। इसका अर्थ हुआ कि इन चारों में से कोई भी श्रेष्ठ नहीं है।

इसके बाद प्राणों ने निकलना शुरू किया। प्राण का अर्थ है श्वासप्रश्वास वायु। सामान्य व्यवहार में हम कहते हैं- सांस आना। सांस लेने से ही हम जीवित रहते हैं। जब कोई मर जाता है तो कहा जाता है इसका प्राणान्त हो गया अर्थात् इसे सांस आनी बंद हो गई।

जब शरीर से प्राण जाने लगे तो सारी इन्द्रियों को शक्तिहीनता अनुभव होने लगी। हम देखते हैं कि यदि हम थोड़ी देर सांस न ले सकें तो हमारा शरीर विकल होने लगता है। अत: प्राणों के अभाव में कष्ट अनुभव करते हुए वाक् आदि सभी इन्द्रियों ने प्राण से कहा कि तुम मत जाओ तुम्हारे बिना हम जी नहीं सकेंगी। तुम्हारे बिना यह शरीर नष्ट हो जाएगा। तुम ही हम सब में श्रेष्ठ हो।

व्याकरणबिन्दव:

(क) हलन्तनपुंसकलिंगशब्दा:

व्यञ्जनों को संस्कृत भाषा में हल् कहते हैं। जिन शब्दों के अंत में व्यंजन अक्षर होता है उन्हें हलन्त शब्द कहते हैं। मनस् और चक्षुस् शब्दों के अंत में 'स्' व्यञ्जन है अत: इन्हें हलन्त कहा जाता है। स् अंत में होने के कारण इन्हें सान्त भी कहा जाता है। मनस् एवं चक्षुस् नपुंसकलिंग शब्द हैं। पयस् शब्द के भी अन्त में स् है अत: यह हलन्त नपुंसकलिंग शब्द है।

(क) येषाम्–यत् सर्वनाम, षष्ठी बहुवचन

(ख) सन्धिच्छेदः

वर्षान्ते = वर्ष + अन्ते
निर्गतेऽजीवत = निर्गते + अजीवत
प्रत्यवदन् = प्रति + अवदन्
तस्मिन्नेव = तस्मिन् + एव

(ग) समास–विग्रहः

वर्षान्ते = वर्षस्य अन्ते
मद्विना = मया विना
अपश्यन्तः = न पश्यन्तः
अश्रृण्वन्तः = न शृण्वन्तः

(घ) विनायोगे द्वितीया, तृतीया, पञ्चमी वा विभक्तिः भवति। अत्र विनाशब्दयोगे श्रोत्रम् इति शब्दे एताः प्रयुक्ताः, एवमेव अन्यत्र सर्वाः प्रयोक्तव्याः–

यथा	श्रोत्रं विना	श्रोत्रेण विना	श्रोत्रात् विना
	....	मया विना	....
	मनः विना	....	....
	....	....	नेत्रात् विना
	प्राणं विना	....	....
	....	वाचा विना	....

संकेताः

	द्वितीया	**तृतीया**	**पञ्चमी**
अस्मद्	माम्	मया	मत्
श्रोत्र	श्रोत्रम्	श्रोत्रेण	श्रोत्रात्
मनस्	मनः	मनसा	मनसः
वाक्	वाचम्	वाचा	वाचः
प्राण	प्राणम्	प्राणेन	प्राणात्
नेत्र	नेत्रम्	नेत्रेण	नेत्रात्

पाठगतप्रश्ना 5.2

1. संस्कृते प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

क) चक्षुषः अनन्तरं किम् इन्द्रियं निरगच्छत्?

ख) श्रोत्रं प्रत्यागत्य इन्द्रियाणि किम् अपृच्छत्?

ग) इन्द्रियाणि मनः प्रति किम् अवदन्?

घ) मनसि आगते प्राणाः किम् अकुर्वन्?

ङ) इन्द्रियाणि प्राणान् किम् अवदन्?

2. अत्र एकम् उत्तरं शुद्धं तत् (√) इति चिह्नेन अंकितं कुरुत-

1. मनः .... प्रोष्य प्रत्यावृत्तम्

क) एकं मासम् ( )

ख) एकं दिनम् ( )

ग) एकं वर्षम् ( )

घ) एकम् अयनम् ( )

3. दत्तेषु पदेषु प्रत्ययं लिखत-

i) प्रत्यागत्य = प्रति + आ + गम् + ...

ii) अश्रृण्वन्तः = अ + श्रु + ...

iii) निर्गतम् = निर् + गम् + ...

iv) परिभ्रम्य = परि + भ्रम् + ...

v) वदन्तः = वद् + ...

किमधिगतम्?

- शरीरे विविधानि इन्द्रियाणि स्वस्वकार्यं कुर्वन्ति।
- सर्वेषाम् इन्द्रियाणां कार्यस्य महत्त्वं भवति।

- प्राणः इन्द्रियेषु श्रेष्ठः, तस्मिन् गते शरीरं नश्यति।
- विना योगे द्वितीया, तृतीया पञ्चमी वा विभक्तिः भवति।
- परस्मैपदधातुभिः सह शतृप्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।
- आत्मनेपदधातुभिः सह शानच्प्रत्ययस्य प्रयोगः भवति।

योग्यताविस्तारः

(क) ग्रन्थ-परिचयः

प्रस्तुत पाठ छान्दोग्य उपनिषद् से लिया गया है। उपनिषद् ग्रंथों की संख्या 108 मानी जाती है। परंतु इनमें ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, श्वेताश्वतर, ऐतरेय, तैत्तिरीय बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य इन ग्यारह उपनिषदों का महत्त्व अधिक बताया जाता है। उपनिषदों में वेदान्त दर्शन की चर्चा की गयी है। आज कल वेदान्त दर्शन में लोगों की रुचि बढ़ रही है। वेदान्त लोगों को चिन्तामुक्त जीवन व्यतीत करने के रास्ते बताता है। वेदान्त में आत्मा एवं परमात्मा के संबन्ध में विस्तार से चर्चा की गई है। प्रत्येक प्राणी में आत्मा विद्यमान है। आत्मा भौतिक शरीर में रहती है। शरीर नश्वर है, आत्मा अमर है। आत्मा न कभी पैदा होती है, न मरती है। शरीर ही पैदा होते या मरते हैं। मनुष्य मूलतः आत्मा स्वरूप है। जैसे मनुष्य अपने वस्त्र बदलता है पुराने वस्त्रों को छोड़ नए वस्त्र पहनता है। वैसे ही आत्मा पुराने शरीर को छोड़ नया शरीर धारण करती है। उपनिषद् कहते हैं कि मनुष्य को मृत्यु से घबराना नहीं चाहिए। यह तो एक नए जीवन का आमंत्रण है।

(ख) भावविस्तार

यद्यपि उपनिषदों में मुख्यरूप से आत्मा के विषय में चिंतन किया गया है फिर भी इनमें जीवन के कई रहस्यों को सरल एवं सहज ढंग से चर्चा का विषय बनाया गया है। धौम्य ऋषि के उपमन्यु, आरुणि और वेद नामक शिष्यों के प्रसंग से कर्तव्यपालन, सत्यकाम जाबाल की कथा के माध्यम से सत्यनिष्ठा और मैत्रेयी और याज्ञवल्क्य के संवाद द्वारा सांसारिक सुखसमृद्धि की सारहीनता और आत्मतत्त्वज्ञान की सारवत्ता को प्रमाणित किया गया है।

प्राणः– श्वास, प्रश्वास वायु, जीवनदायिनी वायु। हम सब सांस लेते हैं तो वायु को नासिका द्वारा फेफड़ों में भरते हैं। फेफड़ों में वह वायु रक्त के साथ मिलती है। रक्त वायु में विद्यमान आक्सीजन को ले लेता है तथा अपने में विद्यमान कार्बनडाइआक्साईड को फेफड़ों से बाहर छोड़ देता है। वह कार्बनडाईआक्साईड वायु के साथ हमारे सांस के साथ बाहर आ जाती है। सांस को अंदर लेना श्वास कहलाता है बाहर छोड़ना प्रश्वास कहलाता है। इस श्वास–

प्रश्वास पर ही हमारा जीवन टिका है। श्वास तथा प्रश्वास को प्राण कहते हैं। प्राण का अर्थ है एक प्रकार की वायु। हमारे शरीर में पांच प्रकार की वायु विद्यमान है– प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान। संस्कृत भाषा में प्राण शब्द का बहुवचन में ही प्रयोग करते हैं। प्रस्तुत पाठ में प्राण का प्रयोग दोनों रूपों में हुआ है एक वचन में भी और बहुवचन में भी।

(ग) भाषा-विस्तार

नः, वः – नः = अस्माकम् = हमारा, वः = युष्माकम् = तुम्हारा

सामान्य रूप से 'हमारा' के लिए संस्कृत भाषा में अस्माकम् और 'तुम्हारा' के लिए युष्माकम् पद का प्रयोग होता हैं परंतु संस्कृत एक लंबे समय तक बोलचाल की भाषा रही है। अतः संक्षेप के कारण अस्माकम् के स्थान पर 'नः' का और युष्माकम् के स्थान पर 'वः' का प्रयोग होता है। अस्माकम् और 'नः' दोनों का अर्थ समान है। इसी प्रकार युष्माकम् और वः का। अस्मद् और युष्मद शब्द के द्वितीया, चतुर्थी एवं षष्ठी विभक्तियों के तीनों वचनों में निम्नलिखित प्रकार से अन्वादेश अर्थात् वैकल्पिक प्रयोग होता है।

अस्मद्		वचन	
विभक्तिः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
द्वितीयाविभक्तिः	माम्	आवाम्	अस्मान्
अन्वादेशः	मा	नौ	नः
चतुर्थीविभक्तिः	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
अन्वादेशः	मे	नौ	नः
षष्ठीविभक्तिः	मम	आवयोः	अस्माकम्
अन्वादेशः	मे	नौ	नः
	युष्मद्		
द्वितीयाविभक्तिः	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
अन्वादेशः	त्वा	वाम्	वः
चतुर्थीविभक्तिः	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
अन्वादेशः	ते	वाम्	वः
षष्ठीविभक्तिः	युष्माकम्	युवयोः	युष्मासु

अन्वादेश:	ते	वाम्	व:

अन्वादेश पद का वही अर्थ होता है जो उसके मूल पद का होता है। हम मूलपद के स्थान पर अन्वादेश पद का भी प्रयोग कर सकते हैं। पर यहाँ एक बात का ध्यान रखने की आवश्यकता है कि अन्वादेश वाक्य के आरंभ में नहीं आते। वाक्य के आरंभ में विभक्ति के रूप ही प्रयुक्त किए जाते हैं जैसे ''त्वां रक्षतु हरि:'' ''मम अस्ति भारतदेश:।'' अन्वादेश रूप का प्रयोग वाक्य के मध्य में कर सकते हैं जैसे ''हरि: सदा त्वा रक्षतु।'' अस्ति मे भारतदेश:।

श्रेष्ठ:– सबसे अच्छा। प्रशस्य = अच्छा। प्रशस्य के स्थान पर ''श्र'' हो गया। हम व्याकरण की भाषा में कहेंगे कि प्रशस्य को 'श्र' आदेश हुआ है। संस्कृत में तुलनात्मक प्रत्यय हैं– तरप्, तमप् और ईयसुन्, इष्ठन्। जब ये प्रत्यय शब्द (प्रकृति) के साथ जुड़ते हैं तो इनका रूप होता है तर, तम जैसे उच्चतर, उच्चतम। ईयस् और इष्ठ, कनीयस् और कनिष्ठ।

जब दो की परस्पर तुलना हो तो जिसे अधिक बताना हो उसके साथ तर या ईयस् प्रत्यय लगाया जाता है जैसे– 'अनयो: अयं छात्र: लघुतर:' में तर प्रत्यय या 'परधर्मात् स्वधर्म: श्रेयान्' में ईयस्। और जब एक को तीन या सबसे अधिक बताना हो तो उसके साथ तम या इष्ठ प्रत्यय लगाया जाता है। 'चतुर्षु भ्रातृषु राम: ज्येष्ठ:' में इष्ठन्। जैसे 'देवदत्त: सर्वेषु छात्रेत्रु सुन्दरतम:' में तमप्।

न:श्रेष्ठ:– हम में सबसे अच्छा। जब बहुत से लोगों या वस्तुओं में से एक को सबसे अच्छा बताना हो तो वहां संबंध या अधिकरण कारक होता है अत: वहाँ षष्ठी या सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। 'जैसे कवीनां कालिदास: श्रेष्ठ:' या 'कविषु कालिदास: श्रेष्ठ:'। बालकेषु गोपाल: कुशलतम:। 'न:' का अन्वादेश सप्तमी में नहीं होता अत: यहां न: श्रेष्ठ: का अर्थ होगा– अस्माकं श्रेष्ठ:। अर्थात् प्राण आदि ने प्रजापति से पूछा– ''को हि न: श्रेष्ठ:'' अर्थात् हम इन्द्रियों के मध्य में कौन श्रेष्ठ है।

यस्मिन् निर्गते– जिस के चले जाने पर। संस्कृत एक संयोगात्मक भाषा है। इसमें विशेष्य और विशेषण में समान लिंग, वचन तथा विभक्ति का प्रयोग होता है। अर्थात् जो लिंग, वचन और विभक्ति विशेष्य में होगी वही लिंग, वचन और विभक्ति विशेषण में होगी। जैसे सुन्दरं पुष्पम्, सुन्दरौ बालकौ, कुशला: बालिका:।

यही नियम सर्वनाम और संज्ञा में भी प्रयुक्त होता है अर्थात् सर्वनाम और संज्ञा पद में समान लिंग, वचन और विभक्ति का प्रयोग होगा। यस्मिन् निर्गते में पूरा वाक्य है 'यस्मिन् इन्द्रिये निर्गते'। इन्द्रिये यहां लुप्त है। निर्गते 'इन्द्रिये' का विशेषण है और 'यस्मिन्' 'इन्द्रिये' का सर्वनाम। इसलिए 'इन्द्रिये' के अनुसार ही 'यस्मिन्' और 'निर्गते' में नपुंसकलिंग, सप्तमी विभक्ति और एक वचन का प्रयोग हुआ है।

कृत्प्रत्यया:

क्त्वा – ल्यप्

एक कार्य के बाद दूसरा कार्य करना है तो पहले कार्य को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं और बाद के कार्य को उत्तरकालिक क्रिया। पूर्वकालिक क्रिया को बताने के लिए क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है जैसे 'राजेश: पठित्वा क्रीडति' यहां पढ़ना पूर्वकालिक क्रिया है, और खेलना उत्तरकालिकक्रिया। अत: पूर्वकालिक क्रिया में क्त्वा प्रत्यय लगा। अन्य उदाहरण–

हस् + क्त्वा = हसित्वा

चल् + क्त्वा = चलित्वा

खेल् + क्त्वा = खेलित्वा

जब धातु से पहले कोई उपसर्ग हो तो क्त्वा के स्थान पर ल्यप् प्रत्यय लगता है– जैसे गम् + क्त्वा = गत्वा परंतु उप + गम् + ल्यप् = उपगम्य। अन्य उदाहरण–

वि + हस् + ल्यप् = विहस्य

सम् + चल् + ल्यप् = संचल्य

उप + कृ + ल्यप् = उपकृत्य

व्याकरणबिन्दव:

(क) हलन्तनपुंसकलिंगशब्दा:

मनस्

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	मन:	मनसी	मनांसि
द्वितीया	मन:	मनसी	मनांसि
तृतीया	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभि:
चतुर्थी	मनसे	मनोभ्याम्	मनोभ्य:
पंचमी	मनस:	मनोभ्याम्	मनोभ्य:
षष्ठी	मनस:	मनसो:	मनसाम्
सप्तमी	मनसि	मनसो:	मनस्सु
सम्बोधन	हे मन:	हे मनसी	हे मनांसि

चक्षुस्

विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमा	चक्षु:	चक्षुषी	चक्षूंषि

द्वितीया	चक्षुः	चक्षुषी	चक्षूंषि
तृतीया	चक्षुषा	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भिः
चतुर्थी	चक्षुषे	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
पंचमी	चक्षुषः	चक्षुर्भ्याम्	चक्षुर्भ्यः
षष्ठी	चक्षुषः	चक्षुषोः	चक्षुषाम्
सप्तमी	चक्षुषि	चक्षुषोः	चक्षुषु
सम्बोधन	हे चक्षुः	हे चक्षुषी	हे चक्षूंषि

पाठान्तप्रश्नाः

1. **संस्कृते उत्तराणि लिखत-**

(क) केषां मध्ये कलहः संप्रवृत्तः?

(ख) प्रजापतिः इन्द्रियाणि किम् अवदत्?

(ग) वाक् किमर्थं शरीरात् निर्गता?

(घ) मनसा जनाः किं कुर्वन्ति?

(ङ) प्राणानां गमनकाले इन्द्रियाणि कीदृशानि अभवन्?

2. **इन्द्रियैः सह तेषां कार्यसम्बन्धीनि पदानि लिखत।**

(i)	प्राणेन	(क)	पश्यन्ति
(ii)	वाचा	(ख)	शृण्वन्ति
(iii)	श्रोत्रेण	(ग)	वदन्ति
(iv)	मनसा	(घ)	श्वसन्ति
(v)	चक्षुषा	(ङ)	ध्यायन्ति

3. **रिक्तस्थानं पूरयत।**

(क) को हि नः ....।

(ख) यस्मिन् गते शरीरं नश्यति स .... श्रेष्ठः।

(ग) प्रथमं वाक् .... निर्गता।

(घ) चक्षुः संवत्सरं .... प्रत्यावर्तत।

(ङ) प्राणनिर्गमनकाले इन्द्रियाणि .... अभवन्।

4. सन्धिं/सन्धिविच्छेदं कुरुत

(i) इति + एतेषाम् = ...

(ii) प्रत्यागता = ...

(iii) प्राण + आदयः = ...

(iv) निरगच्छत् = ...

5. शतृप्रत्ययं योजयत-

यथा - लिख् + शतृ = लिखन्

(i) वद् + शतृ = ...

(ii) श्वस् + शतृ = ...

(iii) लिख् + शतृ = ...

(iv) दृश् + शतृ = ...

(v) हस् + शतृ = ...

6. इन्द्रियाणां कार्यसंबन्धे पञ्चवाक्यानि लिखत

(i) नरा वाचा ....(ii) चक्षुषा...................................

(iii) श्रोत्रेण...................................(iv) मनसा.................................

(v) प्राणैः.....................................

उत्तरमाला

बोधप्रश्नाः

1. (क) प्रजापतिम् (ख) वाक् (ग) श्रोत्रेण (घ) मयि (ङ) नः

2.

(i)	वाचा	वदन्तः
(ii)	चक्षुषा	पश्यन्तः
(iii)	श्रोत्रेण	शृण्वन्तः
(iv)	प्राणेन	श्वसन्तः
(v)	मनसा	ध्यायन्तः

पाठगतप्रश्नाः 5.1

1. (क) प्राणादयः प्रजापतिं पितरं गताः।

(ख) को हि नः श्रेष्ठः?

(ग) यस्मिन् गते शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः इति।

(घ) सर्वप्रथमं वाक् शरीरात् बहिः गता।

(ङ) यथा चक्षुषा अपश्यन्तः नराः जीवन्ति तथा वयम् अपि अजीवाम।

2. (i) पश्यन्तः (ii) ध्यायन्तः (iii) शृण्वन्तः

(iv) श्वसन्तः (v) वदन्तः

पाठगतप्रश्नाः 5.2

1. (क) चक्षुषः अनन्तरं श्रोत्रं निरगच्छत्।

(ख) मयि गते यूयं कथम् अजीवत।

(ग) यथा बालाः मनसा विना जीवन्ति तथा वयम् अजीवाम।

(घ) प्राणाः निर्गन्तुं प्रारभन्त।

(ङ) भगवन्! न गच्छ! त्वम् एव अस्मासु श्रेष्ठः।

2. (ग) एकं वर्षम्

3. (i) ल्यप् (ii) शतृ (iii) क्त (iv) ल्यप् (v) शतृ

पाठान्तप्रश्नाः

1. (क) इन्द्रियाणां मध्ये कलहः संप्रवृत्तः।

   (ख) प्रजापतिः इन्द्रियाणि अवदत् यस्मिन् निर्गते शरीरं नश्येत् स वः श्रेष्ठः इति।

   (ग) आत्मनः श्रेष्ठत्वं प्रमाणीकर्तुं वाक् शरीरात् निर्गता।

   (घ) मनसा जनाः ध्यायन्ति।

   (ङ) प्राणानां गमनकाले इन्द्रियाणि पीडितानि अभवन्।

2.

(i)	प्राणेन	(घ) श्वसन्ति
(ii)	वाचा	(ग) वदन्ति
(iii)	श्रोत्रेण	(ख) शृण्वन्ति
(iv)	मनसा	(ङ) ध्यायन्ति
(v)	चक्षुषा	(क) पश्यन्ति

3. (क) श्रेष्ठः (ख) वः (ग) शरीरात् (घ) प्रोष्य (ङ) पीडितानि

4. (i) इत्येतेषाम् (ii) प्रति + आगता (iii) प्राणादयः

   (iv) निः + अगच्छत्

5. (i) वदन् (ii) श्वसन् (iii) लिखन्

   (iv) पश्यन् (v) हसन्

6. 1. नराः वाचा वदन्ति

   2. नराः चक्षुषा पश्यन्ति

   3. नराः श्रोत्रेण शृण्वन्ति

   4. नराः मनसा ध्यायन्ति

   5. नराः प्राणैः श्वसन्ति

   –इत्यादीनि पञ्च वाक्यानि